दैनिक भास्कर
(19.03.2015)

भोपाल के मुगालिया कोट से ग्राउंड रिपोर्ट

7 लाख कर्ज था, दो बेटियों की शादी भी नहीं हो पाई, फसल से थी आखिरी उम्मीद

तीन साल से फसलें खराब, लेकिन मुआवजा कभी नहीं मिला

अनूप दुबोलिया . भोपाल | राजधानी से सटे मुगालिया कोट गांव में किसान मदन सिंह ने मंगलवार को खुदकुशी की। सात लाख रुपए के कर्ज में डूबे इस किसान पर कर्ज चुकाने के अलावा दो बेटियों की शादी का जिम्मा भी था। दैनिक भास्कर ने बुधवार को दो हजार आबादी के इस गांव में पड़ताल की। मदन के खेत में चने की फसल सड़ चुकी थी। खलिहान में काटकर रखीं गेहूं की बालियों में अंकुर फूटने लगे थे। गेहूं-चने की फसलें यहां पूरी तरह बर्बाद हुई हैं। 18 दिनों में दो बार बारिश और ओले गिरे। गांव वालों ने बताया कि तीन साल से फसलें खराब हो रही हैं। मगर मुआवजा नहीं मिला। मदन के इकलौते बेटे मल्लू ने बताया, पिताजी ने बैंक से 3 लाख 60 हजार रुपए कर्ज लिया था। सोयाबीन की फसल तबाह हो गई तो गांव के तीन लोगों से इतना ही और कर्ज लेकर इस बार गेहूं और चना बोया था। बारिश होने पर दोबारा बोवनी करनी पड़ी थी। कर्ज को लेकर वे हर वक्त चिंता में थे। घर में पांच बहनें हैं। तीन की शादी हो गई। दो बहनों की शादी को लेकर भी हम बेहतर फसल पर निर्भर थे। इस बार मौसम बिगड़ा तो वे भारी तनाव में थे। शेष | पेज 9 पर

को नहीं मिला। इस बार जब मौसम बिगड़ा तो किसानों में घबराहट पहले दिन से थी। मौसम की सूचनाएं डरा रही थीं। जब बारिश और ओलों ने फसलें खराब की तो मदन ने यह कदम उठाया। कोई और वजह थी ही नहीं।

गांव के विश्राम घाट पर दोपहर करीब एक बजे मदन का अंतिम संस्कार हुआ। सरपंच दीवान सिंह लोधी समेत बड़ी तादाद में किसान मौजूद थे। मौके पर पहुंची एसडीएम माया अवस्थी के सामने गांव वालों ने ही मदन की आर्थिक परेशानी सुनाई। बाद में भास्कर से बातचीत में एसडीएम ने दूसरी कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि मदन के बेटे का व्यवहार ठीक नहीं था। कुछ ग्रामीणों ने उसकी शिकायत तीन महीने पहले सूखी सेवनिया थाने में की थी। गांव वालों ने जानकारी दी है कि उस पर साढ़े चार लाख से ज्यादा कर्ज था। उन्होंने यह मानने से साफ इंकार किया कि फसलें खराब से उसने खुदकुशी की। एसडीएम ने मदन के परिवार को रेडक्रॉस से दस हजार रुपए की मदद दी और मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से उसकी बेटियों के विवाह के लिए आश्वस्त किया।

गांव के एक किसान विमल मीना का कहना है कि मदन और उसके बेटे के बीच कलह या विवाद नहीं था। 2005 के बाद गांव वालों को कभी फसलों के नुकसान का मुआवजा नहीं मिला, जबकि कई बार फसलें खराब हुईं। बीती 27 व 28 फरवरी से अब तक 18 दिन में दो बार बेमौसम बारिश हुई है। पटवारी ओपी मालवीय ने बताया कि रविवार से सर्वे शुरू हुआ है।

14 गांवों में फसल को नुकसान, लेकिन मृत किसान की फसल नहीं हुई थी खराब

भोपाल के 14 गांवों में ओलावृष्टि से फसल को नुकसान हुआ है। मुगालिया कोट गांव के जिस किसान ने खुदकुशी की है, उसकी भी एक एकड़ में लगी चने की फसल जरूर खराब हुई है, हालांकि 9 एकड़ में गेहूं की फसल को नुकसान नहीं हुआ है। जहां तक पिछले सालों में गेहूं की फसल को नुकसान की बात है, ऐसी कोई जानकारी नहीं है। यदि ऐसा होता तो गेहूं का उत्पादन भी घटता। गेहूं का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है।
-निशांत वरवड़े, कलेक्टर

7 लाख कर्ज था...

खेतों में ज्यादातर गेहूं और चने की फसलें थीं। चने की फसल को शत-प्रतिशत नुकसान हुआ है। मदन के चचेरे भाई धन सिंह समेत कई ग्रामीणों ने बताया कि तीन साल से ओले और बारिश से फसलें बरबाद हो रही हैं। हर बार सर्वे हुए मगर मुआवजा किसी